श्री झूलेलाल चालीसा

ॐ श्री वरुणाय नमः
ॐ श्री लालाय नमः

ॐ ।। दोहा ।। ॐ

विध्न विनायक गणपति, वाणी होय सहाय ।
सिमरौ गुरू पितु मातु को, जिन दीनी सदराह ।।
नहीं समरथ कुछ कर सकूँ, दर्शन तेरा नाथ ।
श्री अमरलाल गुरुदेव मम, दीजो अपना हाथ ।।

ॐ ।। चोपाई ।। ॐ

अगम अगोचर जलपति देवा । देव करे सब तुम्हारी सेवा ।
जै जै अमर उड़रा लाल । जै जगदीश्वर जै प्रतिपाल ।।

तुम्हरे द्वारे जो भी आया । बिन मांगेही सब कुछ पाया ।
दीन बंधु हे सदा दयालु । अमर अमर भक्तन रख पालू ।।
जब जब भक्तन टेर लगाई । दौड़ आए नाथ गुसाई ।
सिंधु देश मे तुम प्रगटाए । जगपति अमरलाल कहलाए ।।
दुष्ट मर्ख ने भक्त सताए । दुखी भक्त तुम्हरे दर आए ।
कातर स्वर में तुम्हें बुलाए । तुम बिन नाथ न कोई सहाय ।।
आन पड़ा है संकट भारी । देर लगाई क्यों त्रिपुरारी ।
भक्तन की सुन करुण पुकार । धर्म हेतु लीनो अवतार ।। १०

प्रगटे सिंधु नदी के तीर । भक्तों को आके बंधाया धीर ।
दुष्ट मर्ख को मार मनाया । सत्यधर्म आके समझाया ।।
सब जीवों में एक ही नूर । प्रेम करो वो प्रभु ना दूर ।
जल और ज्योति तुम्हरे रुप । सबमें बसते फिर भी अरुप ।।
धर्म के रक्षक अधर्म विनाशक । दुष्ट संहारक भक्त प्रतिपालक ।
जै जगदीश्वर शत शत वंदन । रतनराय देवकी नंदन ।।
तुम्हरी महिमा वेद सुनाये । नारद शारद नित जस गावे ।

मात देवकी झुला झुलाए । निरख छवि बलि बलि जाए ।।

बाम लीलाएं तुम्हारी प्यारी । मात पिता भक्तन सुखकारी ।

जन्म लेत कौतुक प्रभु कीनों। रुदन छोड़ मुख बंद कर लीनो।।

जब तक जल नहीं पूज्यो माता । दूध पाद नहीं कीनो दाता ।

जल के जीव तृप्त जब भए । मुख खोल नाथ जल तब गहे ।।

लीला कर जग को समझाया । सब जीवों में मैं ही समाया ।

किशोर अवस्था जब प्रभु पाई । मात पिता को चिंता आई ।।

जग में नहीं गुरु बिन ज्ञान । कहां मिलेगा गुरु सुजान ।

मात पिता ममता भरमाए । जगत गुरु को कौन पढ़ाए ।।

प्रभु आज्ञा गुरु गोरख आए । जनेऊ गुरु मंत्र तब प्रभु पाए ।

गुरु कर गुरु महिमा समुझाई । गुरु बिन ज्ञान जगत में नाहीं ।।

नाथ तुम्हारे नाम अनेक । विविध रुप हैं फिर भी हो एक ।

आदि नहिं हैं कोई अंत । अमरलाल कहते सब संत ।। ३०

मात पिता ने झूला झूलाया । भक्तों ने झूले-लाल बुलाया ।

सूर्य समान उदय प्रभु भए । नाम उदयचंद तब जन कहे ।।

शुद्ध हृदय जो तुम्हे ध्यावे । पाप कटे और मुक्ति पावे ।

पुगर संत को दीक्षा दीनी । ठकुर वंश की स्थापना कीनी ।।

जल और ज्योति जोभी पूजे । नाथ सदा ता पर की रीझे ।

किस विधि तुम्हारी महिमा गाऊं। मन ही मन प्रभु बलि जाऊं।।

ऐसा मुझको दो वरदान । भुलूं नहीं प्रभु तुम्हारा नाम ।

मैं बालक हूं नाथ तुम्हारा । दया करो हे सिरजन हारा ।।

वरुण चालीसा जों भी गावे । भव सागर ते सो तर जावे ।

विनय हीरे की सुन लीजे । भक्ति दान मोहे दाता दीजे ।। ४०

* *

ॐ ।। दोहा ।। ॐ

कष्ट हरन और सुख करन श्री अमरलाल महाराज ।

तुम्हरे दर आवे जो याचक, होवे पूरन काज ।।

* *

बोलो श्री अमरलाल साहबि जी की जय

आयोलाल सभई चओ झूलेलाल

लाल जा जाटी चओ झूलेलाल